जब इस्राएली लोग मिस्र की गुलामी से छुड़ाए गए और प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश किया, तब परमेश्वर ने उन्हें सात प्रमुख पर्व मनाने का आदेश दिया, जिन्हें “यहोवा के पर्व” कहा गया। ये पर्व पीढ़ी दर पीढ़ी मनाए जाने थे और इनका वर्णन लैव्यव्यवस्था अध्याय 23 में किया गया है। ये पर्व भविष्यद्वाणी के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो नए नियम में विश्वास रखते हैं। आइए, प्रत्येक पर्व और उसके अर्थ को उस समय के इस्राएलियों और आज के विश्वासियों के लिए समझें।

1) फसह का पर्व (पास्का):
फसह 14 निसान को (आमतौर पर मार्च या अप्रैल में) मनाया जाता है। यह उस रात की याद दिलाता है जब इस्राएली मिस्र की अंतिम विपत्ति से बचे थे। उन्होंने एक मेम्ने को बलिदान किया, उसका लहू अपने द्वार की चौखटों पर लगाया और बिना खमीर की रोटी व कड़वे साग के साथ खाया। वे यात्रा के लिए तैयार थे। यह पर्व इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के लिए परमेश्वर की शक्ति की याद है।

मसीहियों के लिए फसह यीशु मसीह की ओर इंगित करता है “परमेश्वर का मेम्ना” जिसका लहू हमारे छुटकारे के लिए बहाया गया। अंतिम भोज में यीशु ने रोटी तोड़ी और दाखरस दी, जो उसके शरीर और लहू के प्रतीक थे (मत्ती 26:26-28)। जैसे इस्राएली मेम्ने के लहू से मृत्यु से बचे थे, वैसे ही मसीही यीशु के बलिदान से अनंत मृत्यु से बचाए जाते हैं।

2) अखमीरी रोटियों का पर्व:
यह पर्व फसह के अगले दिन (15 निसान से) शुरू होता है और सात दिन तक चलता है। इस दौरान इस्राएलियों को अपने घरों से खमीर निकाल देना था और केवल बिना खमीर की रोटी खाना था जो पवित्रता और पाप से छुटकारे का प्रतीक है।

मसीहियों के लिए यह पर्व यीशु को दर्शाता है, जो “जीवन की रोटी” हैं (यूहन्ना 6:35)। जैसे इस्राएली यात्रा में बिना खमीर की रोटी खाते थे, वैसे ही मसीही पापरहित जीवन जीने को बुलाए गए हैं, यीशु की शिक्षाओं के अनुसार।

3) पहिली उपज का पर्व:
यह पर्व फसह के बाद आने वाले पहले रविवार को मनाया जाता है, जब इस्राएली अपनी पहली फसल की बालें परमेश्वर को अर्पित करते थे।

मसीहियों के लिए यह पर्व यीशु के पुनरुत्थान की ओर संकेत करता है, जो उसी दिन हुआ (मत्ती 28:1–10)। पौलुस लिखता है, “परन्तु मसीह मरे हुओं में से जी उठने वालों में से पहिली उपज बन गया है” (1 कुरिंथियों 15:20)। जैसे पहली फसल परमेश्वर को समर्पित थी, वैसे ही यीशु का पुनरुत्थान हमारी भविष्य की आशा है।

4) सप्ताहों का पर्व (शावूओत या पेंतेकोस्त):
यह पर्व पहिली उपज के 50 दिन बाद मनाया जाता है और फसल के अंत का

संकेत है। यह पर्व उस समय की भी याद दिलाता है जब इस्राएलियों को सीनै पर्वत पर व्यवस्था मिली।

मसीहियों के लिए यह दिन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उस दिन पवित्र आत्मा चेलों पर उतरा (प्रेरितों के काम 2:1-4)। यह नए विधान की शुरुआत थी, जिसमें परमेश्वर का आत्मा अब हर विश्वासी में वास करता है। यह पर्व आत्मिक फसल, यानी आत्माओं की कटनी, का प्रतीक भी है।

5) नरसिंगों का पर्व (रोश हशाना):
यह पर्व 1 तिशरी को मनाया जाता है और यहूदी नागरिक वर्ष की शुरुआत को दर्शाता है। यह पश्चाताप और आत्म-जांच का समय है, जिसकी घोषणा शोपार (नरसिंगा) फूंक कर की जाती है।

मसीहियों के लिए यह पर्व मसीह की वापसी की ओर इंगित करता है। “क्योंकि जब प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरता है… और परमेश्वर का नरसिंगा बजेगा, तब मसीह में मरे हुए पहले जी उठेंगे” (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)। यह पर्व उस दिन का प्रतीक है जब मसीह आएगा और अपने लोगों को इकट्ठा करेगा।

6) प्रायश्चित का दिन (योम किप्पूर):
यह 10 तिशरी को मनाया जाता है और यहूदी कैलेंडर का सबसे पवित्र दिन है। यह एक दिन है उपवास, प्रार्थना और प्रायश्चित का, जब

महायाजक पूरी जाति के पापों के लिए बलिदान चढ़ाता था।

मसीहियों के लिए यह पर्व यीशु के पूर्ण बलिदान की ओर इशारा करता है। “पर मसीह महायाजक बनकर… एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और चिरस्थायी छुटकारा प्राप्त किया” (इब्रानियों 9:11-12)। जहां पहले पापों की क्षमा पशुओं के लहू से मांगी जाती थी, वहीं मसीह ने स्थायी क्षमा दी। यह पर्व भविष्यद्वाणी भी करता है कि इस्राएल एक दिन मसीह को स्वीकार करेगा।

7) झोंपड़ियों का पर्व (सुक्कोत):
सुक्कोत 15 तिशरी से सात दिनों तक चलता है। इस दौरान इस्राएली अस्थायी झोंपड़ियों में रहते थे, ताकि मिस्र से निकलने के बाद की यात्रा को याद कर सकें। यह पर्व आनन्द और परमेश्वर की सुरक्षा का उत्सव है।

मसीहियों के लिए सुक्कोत मसीह के हज़ार वर्षीय राज्य की ओर इशारा करता है, जब वह अपने लोगों के बीच वास करेगा (प्रकाशितवाक्य 21:3; जकर्याह 14:16-17)। यह पर्व उस समय का प्रतीक है जब परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरी तरह से पूरा करेगा।

आज के मसीहियों के लिए इन पर्वों का अर्थ:
ये सातों पर्व केवल ऐतिहासिक घटनाएं नहीं हैं, बल्कि वे यीशु

मसीह के द्वारा परमेश्वर की उद्धार-योजना को प्रकट करते हैं: उसका बलिदान (फसह), उसका पुनरुत्थान (पहिली उपज), पवित्र आत्मा का दिया जाना (पेंतेकोस्त), उसका पुनरागमन (नरसिंगा), पापों का प्रायश्चित (योम किप्पूर), और उसका राज्य (सुक्कोत)।

ये पर्व हमें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की याद दिलाते हैं और उस आशा की, जो हमें मसीह में मिली है। वे हमें सजग और तैयारी में जीवन जीने को कहते हैं, क्योंकि मसीह का आगमन निकट है। विशेषकर नरसिंगों का पर्व हमें याद दिलाता है कि प्रभु शीघ्र ही लौटने वाला है।

निष्कर्ष:
यहूदी पर्व मसीह में पूरी हुई परमेश्वर की उद्धार योजना की शक्तिशाली स्मृति हैं, और ये मसीह के पुनरागमन में पूर्ण रूप से पूरी होंगी। ये पर्व विश्वासियों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को समझने और विश्वासयोग्यता से जीने के लिए प्रेरित करते हैं जब तक कि हमारा उद्धारकर्ता फिर न आ जाए।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp